Ques. Examine the Causes and results of Sino-Japanese war 1894-1895?

Ans- 1894 तक जापान ने अपने आपको बहुत शक्तिशाली बना लिया था। जीवन के हर क्षेत्र में उसकी प्रगति के कारण वह पश्चात्य देशों के समान साम्राज्यविस्तार में लग गया था। मेजी पुनर्स्थापना के बाद जापान में तेजी से आन्तरिक परिवर्तन हुआ और जापान के उद्योग-धंधों का विकास हुआ। 1894-94 के चीन जापान युद्ध का बीज तो ... है कि युद्ध के पीछे अनेक ~~अप्रत्यक्ष~~ अप्रत्यक्ष कारण थे जैसे जापान का आधुनिकीकरण हो गया था और वह अपनी सैनिक शक्ति के प्रयोग के लिए युद्ध के लिए तत्पर था। परन्तु प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का कारण कोरिया था।

चीन जापान युद्ध के कारणों के विषय में विनाके ने Far-East के प्रख्यात इतिहासकार ( ) ने लिखा है। "The Sino Japanese war was caused by the political condition of ~~Japan~~ Koria as the gate-way to continental expansion supplemented by a national fearlest Koria should come under the control of some strong foreign power, and by the cenuries old interest of Japan in Koria as the gate Japanese politics, Copled with the buleding interest in control of the resources of the peninsula and in ~~Koria~~ Korea as a market"

चीन और जापान के बीच युद्ध होने का मुख्य कारण कोरिया की स्थिति थी। कोरिया की भूमि पर यह युद्ध भी हुआ। कोरिया पर चीन का

का अधिकार था, यद्यपि वह नाममात्र का था क्योंकि
कोरिया की सरकार अपने आन्तरिक मामले में
स्वतन्त्र थी। उसकी वैदेशिक नीति से तो चीनी सरकार
का कोई ताल्लुक नहीं था। फिर वह कोरिया पर
किसी दूसरे देश का आधिपत्य सहन नहीं कर सकता था।
क्योंकि यह उसकी राजनीतिक प्रतिष्ठा के खिलाफ था।
दूसरी ओर कोरिया की भौगोलिक स्थिति
इस प्रकार की थी जिसे जापान के हृदय पर लक्ष्य
करते ~~हुए~~ हुयी तलवार It arose to be sure as
~~Koria~~ Koreas a dagger pointed at the heart
of Japan ~~कह~~ सकते हैं। जापान को इस बात का
भय था कि यदि कोरिया किसी शक्तिशाली विदेशी
शक्ति के हाथ में चला गया तो यह जापान के
लिये काफी खतरनाक हो सकता है। अतः जापान ~~के~~
नहीं चाहता था कि कोरिया किसी दूसरे देश के अधिकार
में जाये। कोरिया का बहुत अधिक ही महत्व था। वह
चीन और जापान के बीच लिंक स्थापित करता था।
जापान का औद्योगिकरण हो चुका था। अतः उसे एक ऐसे
कोरा बाजार की जरूरत थी ~~जहाँ~~ जिससे वह अपना
तैयार माल बेच सके ~~व्यापार की दृष्टि~~ और
कच्चा माल प्राप्त कर सके। व्यापार की दृष्टि से
कोरिया ऐसा ही छोटा बाजार था। कोरिया चावल उत्पादन
का एक केन्द्र था, जिसके कारण 19वीं शताब्दी के आरम्भ
से ही जापान की दृष्टि कोरिया पर थी। जापान कोरिया
पर अधिकार कर अपनी समस्या का हल करना चाहता
था। साथ ही जापान अपने भोजन के लिये चावल
का बहुत बड़ा हिस्सा कोरिया से ही मंगवाता था।
इसलिये ही जापान कोरिया की ओर आकृष्ट हुआ।
कोरिया की ओर जापान का आकृष्ट होना
चीन से छिपा नहीं था। उसने देखकर चीन ने
भी अपनी दिलचस्पी ली और कोरिया के मामले
में हस्तक्षेप करने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि

~~अब कोरिया में राजनीतिक गड़~~

अब कोरिया में राजनीतिक गड़बड़ियाँ शुरू हुयी थे कोरिया के एक दल ने जो कि कोरिया में जापानी हस्तक्षेप का विरोध करता था वह जापानी डेलिगेशन पर हमला किया, और कई जापानियों को मार डाला। जापान ने इस समय अपनी बुद्धिमानी से काम लिया। उसने कोरिया के विरुद्ध लड़ाई न करके कोमोडोर पेरी के समान 1876 में एक सैनिक दूतमंडल कोरिया सरकार से व्यापारिक संधि के लिये भेजा। जापान और कोरिया के बीच संधि हो गयी। इस संधि के अनुसार जापान को सिओल तथा कुछ अन्य कोरियन बन्दरगाहों से व्यापार करने का अधिकार मिला। इसके अतिरिक्त व्यापार के लिये कोरिया में आने वाले जापानी नागरिकों को कानून के क्षेत्र में अतिरिक्त भू-भागीय अधिकार भी मिला। अब चीन कोरिया के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगा। जापान तो पहले से ही कोरिया में हस्तक्षेप कर रहा था। फलतः युद्ध की सम्भावना से बचने के लिये 1885 में चीन और जापान के बीच समझौता हुआ। लेकिन यह समझौता चीन और जापान की आपसी कटुता को समाप्त नहीं कर सका। इस समझौते से चीन के अनेक राजनीतिक [illegible] पर चीन और जापान को। क्योंकि इससे कोरिया में चीन और जापान की स्थिति समान हो गयी थी। जबकि कोरिया पर विशेष अधिकार होना चाहिये था क्योंकि चीन का

राजनीतिक दृष्टि से वह चीन के अधीन था। अतः चीन में समझौते के विरुद्ध भावना प्रबल ~~होती जा रही~~ लगी थी।

रूस अपनी सीमाओं का प्रसार इतनी तेजी के साथ कर रहा था कि उसकी दक्षिणी पूर्वी सीमा को कोरिया से आ मिली थी। रूसी कुमार कोरिया का पुर्नगठन कर रहे थे तथा कोरिया ने एक लाजरफ नामक बन्दरगाह रूस को सौंप दिया। रूस का कोरिया पर प्रभाव यहीं तक नहीं था। वह ट्रान्स साइबेरियन नामक 3500 मील लम्बी एक रेलवे लाईन बनाने वाला था। रूस के कोरिया पर बढ़ते प्रभाव से जापान की सुरक्षा को खतरा था।

चीन जापान युद्ध के दो प्रधान कारण जैसा कि प्रत्येक युद्ध का होता है एक तो मौलिक कारण दूसरा तत्कालिक कारण। जहाँ तक युद्ध के मौलिक कारण का प्रश्न है कोरिया की आन्तरिक स्थिति अच्छी नहीं थी वहाँ का शासन निर्बल था और देश के दरबारियों में बराबर संघर्ष होता रहता था। इनमें राजनीतिक शक्ति दो भागों में विभक्त थी। दल राजा और लड़ाई का एक प्रमुख कारण था किन्तु जो दल रानी के पक्ष में था वह विदेश विरोधी नीति रानी समाज के पक्ष में था। तब रानी विदेशों से सम्पर्क स्थापित कर ली थी तब कोरिया में भीषण अकाल पड़ा। कोरिया के लोगों ने सोचा कि विदेशी रानी। इस पर कोरिया के लोगों ने सोचा कि विदेशी सम्पर्क के कारण ही अकाल पड़ रहा है। अतः कोरिया में रानी का जबर्दस्त विरोधी दल उत्पन्न हो गया। इस भीड़ ने रानी की हत्या के लिये राजमहल पर आक्रमण कर दिया। यदि चीन चाहता तो अपनी सेना की टुकड़ी भेज कर रानी को मुक्त करा सकता था और इस भीड़ का अन्त कर सकता था किन्तु वह अपनी ही समस्या में इस तरह उलझा था। जापान ने कोरिया की स्थिति को काबू में नहीं ला सका। जापान ने अवसर से ज्यादा फायदा उठाया और अपना रेजीमेन्ट भेज कर रानी को सहायता किया। रूस का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। उधर कोरिया में रूस का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। कोरिया में उसे व्यापार के लिये लाजारेफ बन्दरगाह मिल गया था। जापान कभी भी इसे सहन नहीं कर सकता था।

कोरिया में जापान की दिलचस्पी का प्रमुख कारण आर्थिक भी था। कोरिया में काफी चावल पैदा होता था जिसका कोरिया में निर्यात नहीं होता था। पश्चिमी देशों से सम्पर्क, व्यापार के प्रसार के कारण कोरिया की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो गयी थी। जापान में बड़े बड़े उद्योग स्थापित हो चुके थे। जापान कोरिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर वहाँ के चावल का अपनी जनता के लिये उपयोग करना चाहता था। इसके साथ जापान को बढ़ती हुयी व्यावसायिक स्थिति के लिये भी एक ऐसे बाजार की जरूरत थी, जहाँ वह अपना तैयार माल बेच सके और कच्चे माल प्राप्त कर सके। कोरिया इसके लिये उपयुक्त देश था। ~~आर्थिक~~ आर्थिक स्थिति ~~सुरक्षित~~ सुरक्षित बनाने के लिये राजनीतिक सत्ता कायम करना जरूरी था।

तोंगहाक सम्प्रदाय का उदय -

1894 में कोरिया में तोंगहाक का उदय हुआ। जो कोरिया में विदेशी प्रभाव का विरोधी था। कोरिया सरकार ने इस दल को कानून बनाने से रोक दिया। इस पर तोंगहाक लोगों ने अन्य विरोधी दलों से मिल कर विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिये चीन से सेना आयी, लेकिन तब तक विद्रोह शान्त हो चुका था। कोरिया से कौन पहले अपनी सेना हटाये। चीन और जापान में इस प्रश्न पर समझौता नहीं हो सका। और ~~अन्ततः~~ अन्ततः दोनों के बीच 1894-95 में युद्ध छिड़ गया। सैनिक तथा प्रशासनिक दुर्बलता के कारण इस युद्ध में चीन की हार हो गयी। यद्यपि चीन की सेना जापान की सेना से कहीं अधिक विशाल थी। जापान की सेना बड़ी नहीं थी परन्तु प्रशिक्षित थी और उसका संगठन आधुनिक ढंग से किया गया था। अब मंचू सरकार ने यह

यह महसूस किया कि जापान के साथ युद्ध अभी रखना खतरे से खाली नहीं है और उसने चीन के प्रमुख राजनीतिज्ञ लि-हुंग चांग को संधि करने की जिम्मेदारी सौंपी। 29 जुलाई 1895 ई० को शिमोनोसेकी की संधि द्वारा इस युद्ध का अन्त हो गया। संधि की शर्ते निम्नलिखित थी –

(i) लियाओतुंग जापान को दे दिया जावे।

(ii) फारमोसा का विशाल द्वीप जापान को दे दिया जावे।

(iii) पेस्काडोर्स द्वीपसमूह पर जापान का अधिकार हो,

(iv) इसके अतिरिक्त चीन जापान को रणनीति के रूप में जापान को भारी रकम दे, और रकम वसूल होने तक जापान बन्धक के रूप में वेई हाई वेई के बन्दरगाह को रखे।

(v) कोरिया को स्वतन्त्र राज्य के रूप में स्वीकार किया जावे और चीन उस पर किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं रखे।

(vi) जापान के व्यापार के लिये चार और बन्दरगाह खोल दिये जाये और ये थे चांगशी और सुचांकेंग तथा ग्रैण्ड कैनेल, चुंगो और हांगको।

(vii) कोरिया में जापान को वह सारी सुविधायें दी जावें, जो दूसरे पाश्चात्य देशों को मिलती है।

अब ऐसा लग रहा था कि चीन और जापान आपस में इस समस्या को नहीं सुलझाते तो अन्य पाश्चात्य देश इसमें हस्तक्षेप करते।

यदि जापान फारमोसा, पेस्काडोर्स तथा अन्य बन्दरगाह और खजाने की रकम सब कुछ ले लेता तो स्थिति कुछ दूसरी होती, लियाओतुंग ऐसा प्रदेश था जिसे चीन तो अपने हाथ से नहीं ही जाने देना चाहता था, रूस भी उस पर

जापानी प्रभुत्व को बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इन सब कारणों से रूस ने इसका विरोध किया। बाद में फ्रांस और जर्मनी ने भी रूस का समर्थन किया। इस तरह सम्मिलित शक्तियों के दबाव से जापान को लियाओतुंग प्रदेश का मोह छोड़ देना पड़ा। किन्तु यह प्रदेश यूरोपीय इतिहास का एलसस लॉरेन्स प्रदेश बन गया। जापान अपने इस अपमान को नहीं भूला और 1904 में रूस से छीन कर लियाओतुंग ले लिया।

युद्ध का परिणाम - इस युद्ध के परिणामस्वरूप जापान को कोरिया जैसा बाजार मिला। जहाँ वह अपना तैयार माल बेच सकता था और कच्चा माल आसानी से खरीद सकता था। इस युद्ध के परिणामस्वरूप चीन की सैनिक कमजोरी निर्विवाद रूप से दुनिया के सामने आ गयी। अब तक चीन की शक्ति के सम्बन्ध में उनको जो आशा थी वह समाप्त हो गयी। वे सोचने लगे कि जापान के समान वे भी चीन को अपनी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का शिकार बना सकते हैं। अब जापान, ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी सभी पाश्चात्य देश चीन में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये लूट खसोट मचाने लगे।

दूसरे चीनी जापानी युद्ध में जापान विजय से दुनियाँ की नजर में जापान की प्रतिष्ठा बढ़ गयी। अब जापान और रूस एक दूसरे के आमने-सामने आये जिसकी अंतिम परिणति 1904 में रूस जापान युद्ध में हुआ। लियाओतुंग को लेकर [illegible]